# उपसंहार

# उपसंहार

सुदर्शन भाटिया एक बहुआयामी लेखक हैं। उन्होंने प्राय: साहित्य की प्रत्येक विधा पर अपनी कलम चलाई है। सुदर्शन भाटिया जी व्यवसाय से तो अभियंता रहे हैं, लेकिन अपनी बहुआयामी व्यस्तताओं के बावजूद उन्होंने जीवन को जिस सच्चाई के साथ जिया है, वह उनकी कलम से बहकर उनकी रचनाओं में परिवर्तित होता रहा है। यह क्रम आज भी निरंतर जारी है। साहित्य जगत को उनका अतुलनीय योगदान सदैव प्रेरणास्रोत के रूप में समग्र रूप से सामने आता है, जो संभवत: नवोदित रचनाकारों के लिए कहीं-न-कहीं मार्गदर्शक बनकर सामने आ खडा होता है। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में सामाजिक चेतना को रेखांकित किया है। अध्ययन की सुविधा के अनुसार प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में सुदर्शन भाटिया जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व की झाँकी मिलेगी। भाटिया जी का जन्म 5 जून 1940 को अविनाशी लाल भाटिया के यहाँ सरगोधा (पाकिस्तान) में हुआ, लेकिन देश का बँटवारा होने के कारण उनका बचपन हरियाणा में बीता। लेखन का शौक उन्हें बचपन से था। भाटिया जी इलैक्ट्रिकल इंजीनियर, ऐरोनाँटिकल इंजीनियरिंग, पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एवं सोशियोलॉजी जैसे विभिन्न विषयों में तीन बार स्नातक हुए हैं। उनका विवाह जगदीश कौर नामक युवती से हुआ। उन्होंने अन्तर्जातीय प्रेमविवाह किया। उन्हें दो बेटियाँ और एक बेटा है।

सुदर्शन भाटिया जी का परिवार अपनी अध्यात्मिक खासियत के कारण 'श्रीराम-शरणम' मिशन से सहजता से जुडा था, जो क्रम अब भी जारी है। भाटिया जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर रूहानियत की गहरी छाप शायद 'श्रीरामशरणम्' मिशन के अगुवा भक्त हंसराज महाराज की दी हुई है।

सुदर्शन भाटिया जी का रचना संसार कहानी, लघुकथा, उपन्यास, स्वास्थ्य, व्यंग्य, धर्म, प्राकृतिक चिकित्सा, शिशुपालन, स्त्री-शिक्षा, जीवनी, गृहविज्ञान, योगशिक्षा, गृहवाटिका, पर्यावरण, साहसिक व्यक्तित्व, बोधकथाएँ, प्रेरक प्रसंग, बालसाहित्य आदि विधाओं में आबद्ध है। उन्हें इन साहित्य कृतियों पर बहुत से सम्मान तथा पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्होंने अपने निजी जीवन में जो कुछ देखा परखा उसका लेखा-जोखा अपने साहित्य में लिया है। भाटिया जी ने

कहानी, लघुकथा, उपन्यास तथा जीवनी साहित्य भी लिखा है। कहानियों में राजनीति, भ्रष्टाचार तथा व्यभिचार और रिश्तों में पड रही दरारों का दर्शन होता है। उनके उपन्यास साहित्य के द्वारा ग्रामीण समस्या, नारी की महिमा तथा राजनैतिक विसंगतियों और उसमें रोजमर्रा हो रहे अवमूल्यन की स्थितियों का दर्शन होता है।

निष्कर्षत: कहना गलत नहीं होगा, कि सुदर्शन भाटिया जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व से उनके साहित्य को समझने में देर नहीं लगती। अत: कहा जा सकता है, कि सुदर्शन भाटिया जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है। साथ ही समाज के लिए प्रेरणादायी है।

द्वितीय अध्याय में सुदर्शन भाटिया जी के उपन्यासों की विषयवस्तु का मूल्यांकन किया गया है। 'कल्लो' उपन्यास का प्रारंभ वर्णनात्मक तथा रोचकता उत्पन्न करता है। विवेच्य उपन्यास में कथा-नायक 'परदेसी' एक आदर्श युवक है, जो गाँवों का सुधार करना चाहता है। तथा अपने बुद्धि कौशल से कुरीतियों को दूर करता है, एक प्रेरणा बनता है। वह किश्नू के घर मेहमान बनकर रह रहा है। परंतु वह जानता है, कि वह तो बहता पानी है, एक ही स्थान पर ठहर नहीं सकता। किश्नू की बेटी 'कली' (कल्लो) उससे प्रभावित होती है। उसका सान्निध्य सुख प्राप्त करती है, परंतु परदेसी बंधना नहीं चाहता।

गाँव के नम्बरदार का बेटा कैलाश किश्नू की बेटी (कली) से दुर्व्यवहार करता है, परदेसी उसे बचाता है। फिर भरी पंचायत में वह नम्बरदार को बिना नाम लिए इस घटना से अवगत करवाता है कि गाँव का कोई युवक यदि गाँव की किसी लडकी से बलात्कार का प्रयत्न करता है, तो उसे क्या दंड मिलेगा। नम्बरदार कहता है कि उसे गोली से उडा दिया जाएगा। जब नम्बरदार को पता चलता है कि उसी के बेटे ने अभद्र व्यवहार किया है, तो वह उसे जिंदा जलाने के लिए तैयार हो जाता है। परदेसी तथा अन्य लोगों के कहने पर नम्बरदार सजा कम कर देता है। कैलाश के कपडे उतारकर उसके शरीर पर गुड का लेप लगाकर उस पर चीटियाँ छोड दी जाती है। कैलाश तडपता है, और उसका बुरा हाल हो जाता है। कल्लो को बहन कहकर छुटकारा करवाता है, परंतु मन में प्रतिकार की भावना भडकती है। अवसर की तलाश में रहता हैं तथा अपने मित्र राजेश के साथ षडयंत्र रचता है। वे दोनों युवक को मारने के लिए गाँव पहुँचते हैं, तो पता चलता है, कि परदेसी तो जा चुका है।

वे उसका पीछा करते हैं। जंगल में एक साधु से उन्हें उसका पता चलता है। जब वे परदेसी को मारने वाले ही थे, तब साधु उसे बचाता है। वह साधु दूसरा-तिसरा कोई नहीं वह 'कल्लो' थी।

विवेच्य उपन्यास का नायक युवक (परदेसी) का गाँव का नव-निर्माण, उसका आर्थिक पुनर्रुद्धार तथा गाँव में हर तरह से जागृति लाना ही अपना मुख्य लक्ष्य मानता है। 'कल्लो' समस्यापरक उपन्यास है, जिसकी आँख समाजसुधार पर है। कुल-मिलाकर भाटिया जी ने इस कृति के माध्यम से मानवीय मूल्यों और परंपरागत मान्यताओं को कथा के माध्यम से सहज ढंग से पेश करने का सार्थक प्रयास किया है।

'सुलगती बर्फ' सुदर्शन भाटिया जी का दूसरा सामाजिक उपन्यास है। इसका शीर्षक प्रतीकात्मक है। कथानक आद्योपान्त रोचक, कुतूहलवर्धक होने के साथ-साथ परंपरागत औपन्यासिक कथ्य शैली का सफल निर्वहन करता है। रेलयात्रा के दौरान मुख्य चरित्रों गिरीश तथा पुष्पा के मध्य पहले तकरार तत्पश्चात प्रेम के बीज अंकुरित होते हैं। गिरीश एक विख्यात कवि है, जिसकी कविताएँ अक्सर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती है। पुष्पा से भी प्रथम मुलाकात के समय वह दिल्ली कवि संम्मेलन में कविता पढने के लिए जा रहा था। वहाँ उसकी भेंट वयोवृद्ध कवि अटलजी से होती है, जो उसकी असाधारण विद्वत्ता तथा आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर बेटी सुमन का विवाह उससे करने का निश्चय कर लेते हैं। लेकिन मुलाकात के वक्त गिरीश और सुमन के हृदय में भाई-बहन सी पवित्र भावनाओं का उद्वेलन हो उठता है।

गिरीश के पिता और अटल जी गिरीश और सुमन का विवाह तय करते हैं। बहुत दिनों के बाद गिरीश जब पुष्पा से मिलने के लिए जाता है, तब वह समझती है कि गिरीश अपने विवाह का निमंत्रण देने पहुँचा है, तब वह बहुत बीमार थी, उसी अवस्था में उसका तिरस्कार करते हुए स्वयं को 'सुलगती बर्फ' कहकर दो ही शब्दों में गहरी बात कह जाती है।

लेकिन अंत में गिरीश की सूझबूझ से तथा उसके मित्र सतीश की मदद से यह पता चलता है, कि सुमन ही गिरीश की बहन है। और अंत में गिरीश और पुष्पा तथा सुमन और सतीश का विवाह हो जाता है।

इस प्रकार 'सुलगती बर्फ' एक अर्थपूर्ण, सामाजिक विसंगतियों एवं आस्थाओं को चित्रित करनेवाला रोचक संग्रहणीय उपन्यास है।

संक्षेप में कहना होगा कि, विवेच्य उपन्यासों में सामाजिक तथा पारिवारिक मूल्यों को पनपनें, फलने-फूलने के अवसर प्रदान हो पाए। विषयवस्तु की दृष्टि से विवेच्य उपन्यास सफल रहे हैं।

तृतीय अध्याय में सुदर्शन भाटिया जी के उपन्यासों में चरित्र-सृष्टि के उपरांत जो तथ्य सामने आए हैं वे इसप्रकार हैं - सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' उपन्यास का नायक के रूप में 'युवक' (परदेसी) है, जो समाजसेवक, अत्याचार का विरोधी, विधवा की सहायता करनेवाला, व्यवहार कुशल आदि गुणों से युक्त दिखाई देता है। उपन्यास की नायिका 'कल्लो' (कली) है, जो स्पष्टवादी, भावुक, शरारती तथा प्रेमिका के रूप में चित्रित की गयी है। गौण पात्र के रूप में कैलाश, राजेश, शीला तथा नम्बरदार चौधरी हैं। कैलाश और राजेश कॉलेज में एक साथ पढ़ते हैं। उन दोनों में गहरी दोस्ती है। कैलाश कॉलेज का बिगडा हुआ लडका है। अतः उपन्यास में कैलाश का चरित्र खलनायक की भाँति दिखाई देता है। शीला एक अच्छी लडकी है। उसमें समाजसेवी एवं सच्ची प्रेमिका के गुण दिखाई देते है। नम्बरदार चौधरी एक प्रामाणिक चौधरी है। उन्हें अपने गाँव के प्रति खूब प्रेम हैं। उपन्यास के अन्य पात्र अपनी-अपनी विचारधाराएँ लेकर सामने आते हैं। विवेच्य उपन्यास में विभिन्न वर्ग के पात्रों का वर्णन सुदर्शन भाटिया जी ने बडी मार्मिकता से किया है। उपन्यास में भाटिया जी ने ग्रामीण समस्याओं को चित्रित किया है। अतः 'कल्लो' उपन्यास चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सफल उपन्यास है।

सुदर्शन भाटिया जी के 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में चरित्र-चित्रण का उचित निर्वाह हुआ है। विवेच्य उपन्यास का नायक गिरीश के व्यक्तित्व में कवि गिरीश, आदर्श बेटा, गरीबों की सहायता करने वाला, दहेज का विरोधी, अभिनेता आदि विशेषताएँ उसके व्यक्तित्व में इंगित होती है। पुष्पा उपन्यास की नायिका है। उसके व्यक्तित्व में स्पष्टवादी, जिज्ञासू, विरहिणी आदि गुण दृष्टिगोचर होते हैं। गौण पात्रों के रूप में सुमन, अटलजी, सतीश तथा लाला माणिकचंद्र हैं। सुमन अटलजी की बेटी है। वह एक सुशील और गुणवान बेटी है। अटलजी एक कवि और धनवान व्यक्ति है। सतीश गिरीश का बचपन का दोस्त है। वह लंदन में पढ़ता है। इसमें सच्चा मित्र, नए विचारों का प्रवर्तक आदि विशेषताओं से उसका व्यक्तित्व तेजस्वी बना है। लाला माणिकचंद्र जी गिरीश के पिताजी है। वे एक बडे व्यापारी हैं। वे प्राचीन सभ्यता में विश्वास की भावना जतलाते

है। उपन्यास में अन्य पात्रों का उल्लेख प्रसंगवश और यथायोग्य मिलता है। पात्र संख्या, पात्र चयन तथा चरित्र चित्रण की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास सफल रहा है।

चतुर्थ अध्याय में संवाद या कथोपकथन का अनुशीलन किया है। भाटिया जी ने अपने 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में रोचकता तथा मौलिकता लाने हेतु संवादों का प्रभावशाली चित्रण किया है। उन्होंने 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में स्वगत संवाद, प्रकट संवाद तथा छोटे संवाद लिखे हैं, जो अत्यंत मार्मिक तथा रोचक है। उन संवादों में जो गंभीरता छिपी होती है, जो आम पाठक को सोचने के लिए बाध्य करती है। इसलिए उनके साहित्य में कथोपकथन का महत्त्व रहा है। लेखक भाटिया जी ने आम पाठकों को उपन्यास सहजता से समझ में आए, इस हेतु से संवादों का भरपूर मात्रा में प्रयोग किया है।

अत: कहना आवश्यक होगा कि, संवादों की दृष्टि से भाटिया जी के 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यास सफल रहे हैं।

पंचम अध्याय में भाटिया जी के उपन्यासों का देशकाल-वातावरण की दृष्टि से विवेचन विश्लेषण किया है। उसमें जो तथ्य हैं, वे इस प्रकार हैं - किसी भी साहित्य पर वातावरण का प्रभाव होता है। लेखक जिस वातावरण में पलता बढ़ता है, उससे वह प्रभावित होता है। उसी प्रभाव के कारण वह साहित्य सृजन करता है। अत: सुदर्शन भाटिया जी ने अपने 'कल्लो' उपन्यास में हिमाचल प्रदेश के ऊँचे-ऊँचे पर्वत, छोटे-छोटे चश्में का अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रांकन किया है। इस उपन्यास में पर्वतांचल की पृष्ठभूमि में ग्रामीण जीवन की झाँकी देखने को मिलती है। 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण को लिया है। समाज में स्थित प्रथा, परंपराएँ, अंधविश्वासों आदि का चित्रण दिखाई देता है। अत: भाटिया जी के साहित्य में सामाजिक वातावरण का पूर्ण चित्रण देखने को मिलता है।

षष्ठ अध्याय के निष्कर्ष निम्नांकित हैं - सुदर्शन भाटिया जी के उपन्यासों का भाषाशैली की दृष्टि से विवेचन -विश्लेषण किया है। भाषाशैली की दृष्टि से भाटिया जी ने रोचक, प्रभावपूर्ण तथा पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। अपनी भाषा को जीवंत बनाने के लिए भाटिया जी ने विभिन्न भाषाओं से शब्द ग्रहण किए हैं। जिसमें अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग मिलता हैं। इसके साथ-साथ संयुक्त शब्द, मुहावरे, शब्द पुनरूक्तियाँ आदि का प्रयोग कम-अधिक मात्रा में प्रसंगानुकूल परिलक्षित होता है।

विवेच्य उपन्यासों में भाटिया जी ने प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक, प्रश्नोत्तर तथा संवादात्मक आदि विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है।

निष्कर्षतः कहना आवश्यक होगा कि, भाषाशैली की दृष्टि से भाटिया जी के 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यास सफल रहे हैं।

सप्तम अध्याय में विवेच्य उपन्यासों के उद्देश्य स्पष्ट किए हैं। सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' उपन्यास का उद्देश्य ग्रामसुधार है, जिसे लेखक ने युवक (परदेसी) के द्वारा पूरी तरह सफल बनाया है। युवक हर एक गाँव जाकर उस गाँव में जो समस्या है, उसे दूर करता है।

'सुलगती बर्फ' उपन्यास का उद्देश्य प्रेम और जीवनसंघर्ष है। जिसे लेखक ने गिरीश और पुष्पा के माध्यम से दिखाया है। भाटिया जी नर-नारी के अन्तरमन में अवगाहन करके ऐसी मानवीय संवेदनाओं का चित्रण करते है, जो सार्वभौमिक है। 'सुलगती बर्फ' में अलग-अलग पात्रों के माध्यम से प्रेम की अन्विति दिखाई गयी है। इसप्रकार भाटिया जी अपने मानवतावादी उद्देश्य की पूर्ति में पूर्णतः सफल सिद्ध हुए है।

-----x-----